कैंसर का ज्योतिषीय दृष्टिकोण

डॉ. सुशील अग्रवाल

कैंसर का नाम सुनते ही पैरों तले जमीन खिसक जाती है क्योंकि कैंसर एक घातक एवं जानलेवा रोग है।

कैंसर क्या है?

सामान्य रूप से स्वस्थ शरीर की कोशिकाएं नियंत्रित गति से बनती–टूटती हैं। कोशिकाएं यदि रोगी/क्षतिग्रस्त हों तो उनका बनना–टूटना अनियंत्रित हो जाता है जिससे रोगी कोशिकाएं शरीर में बहुत तेजी से फैलती जाती हैं और उस अंग में कैंसर होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

कैंसर का रूप

UICC (Union for International Cancer Control) के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 82 लाख लोगों की कैंसर से मृत्यु होती है जिसमें से लगभग 40 लाख लोगों की उम्र 30 से 70 के मध्य होती है। यह रोग सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरा बनता जा रहा है। इस रोग के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाने के लिए 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है।

कैंसर के कारण

वैज्ञानिक तौर पर कैंसर के स्पष्ट कारण उपलब्ध नहीं हैं। आधुनिक जानकारी के अनुसार लगभग 5 प्रतिशत से 10 प्रतिशत कैंसर ही अनुवांशिक होते हैं और बाकी 90 प्रतिशत से 95 प्रतिशत का कारण वातावरण होता है जिसमें खाना–पीना, मोटापा, तम्बाकू आदि शामिल हैं।

कैंसर के लक्षण

कैंसर के कुछ सामान्य लक्षण निम्न हैं :

- लम्बे समय तक ठीक न होने वाले मुंह के छाले, आवाज में बदलाव आना, निगलने में कठिनाई होना।
- शरीर के किसी भी अंग में गाँठ होना जिसका आकार, रंग और संरचना बदल रही हो।
- शरीर के किसी भी अंग में मस्सा/तिल होना जिसके आकार, रंग और संरचना में बदलाव आ रहा हो।
- यूरिनल ब्लैडर में कैंसर होने से पेशाब में रक्त आता है। मल में रक्त आने से बवासीर के साथ–साथ आँतों का कैंसर भी हो सकता है।
- बार–बार खांसी हो और लम्बे समय तक ठीक न हो या सांस लेने में कठिनाई हो।

कैंसर और प्राचीन साहित्य

चिकित्सा ज्योतिष के क्षेत्र में जातक तत्त्वम एक अनुपम ग्रन्थ है परन्तु इसमें और अन्य आर्ष साहित्य में कैंसर के योग उल्लिखित नहीं हैं क्योंकि इसका पता आधुनिक युग में ही चला है।

ज्योतिषीय भाव, कारक, योग और दशा

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से निम्न भाव, कारक और योग कैंसर के प्रतीक होते हैं :

- लग्न, लग्नेश का पीड़ित होना आवश्यक है क्योंकि लग्न, लग्नेश शरीर हैं। नवांश लग्न का भी आकलन करना चाहिए।
- लग्न, लग्नेश पीड़ित होकर गुरु से संबंध बनाये क्योंकि गुरु फैलाव या ग्रोथ के कारक हैं। गुरु पीड़ित हों तो सम्भावना अधिक बनती है।
- लग्न, लग्नेश का अष्टम भाव या अष्टमेश से सम्बन्ध लम्बी बीमारी दे सकता है। भाव–भावेशों पर पीड़ा और बल भी देखनी चाहिए।
- प्रथम भाव के कारक सूर्य पीड़ित हों। यदि सूर्य और लग्न/लग्नेश दोनों पाप ग्रहों के प्रभाव में हों तो भी कैंसर की प्रबल सम्भावना रहती है।
- रोग भाव/रोगेश का अष्टम/अष्टमेश से सम्बन्ध एक लम्बी अवधि की बीमारी दे सकता है।
- राहु विष का कारक है और शनि लम्बी अवधि के रोग दे सकते हैं इसीलिए इनकी भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।
- कोशिकाओं में श्वेत एवं लाल रक्त कण होते हैं इसलिए चन्द्र और मंगल भी यह रोग देने में भूमिका

निभा सकते हैं। यह कहा जाता है कि कर्क लग्न की कुंडली में कैंसर की संभावना अधिक होती है परन्तु यह अभी शोध का विषय है जिसे आंकड़ों के आधार पर परखा जाना शेष है।

- रोगेश यदि लग्न, आठवें या दसवें भाव में बैठे हों और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो भी कैंसर की प्रबल सम्भावना होती है।
- कमजोर चंद्रमा पाप ग्रहों की राशि में छठे, आठवें या बारहवें भाव में हों और लग्न अथवा चंद्रमा, शनि और मंगल से दृष्ट हों तो भी कैंसर की प्रबल सम्भावना होती है।
- नैसर्गिक पापी ग्रहों या त्रिक भावेशों की दशा एवं अन्तर्दशा में रोग होने की सम्भावना होती है। अगर आने वाली दशाएं भी पापी ग्रहों की हों तो राहत मिलने की उम्मीद कम ही होती है।

योग होने पर अंग निर्धारण में लिए एक विशेष भाव में पाप प्रभावों की अधिकता से उस भाव सम्बंधित अंग में कैंसर होने की संभावना होती है जिसके लिए द्रेष्काण का आकलन आवश्यक है परन्तु अंग निर्धारण इस लेख का विषय नहीं है।

उदाहरण–1

जन्म तारीख : 20 जनवरी 1953, जन्म समय : 18.53 बजे, जन्म स्थान : Tirunelveli, Tamil Nadu, लिंग: पुरुष। जातक को 4 फरवरी 2017 को अस्पताल में दाखिल कराया गया और इनको पैंक्रियास का कैंसर निकला। जातक की 1 जून 2017 को मृत्यु हो गयी।

उदाहरण 1 जन्मकुंडली

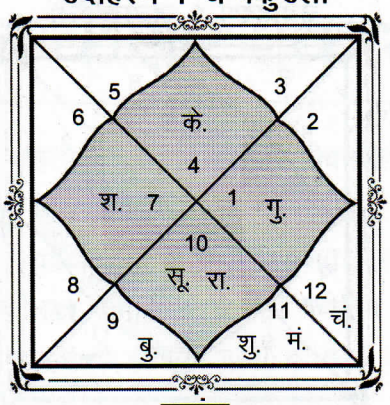

नवांश

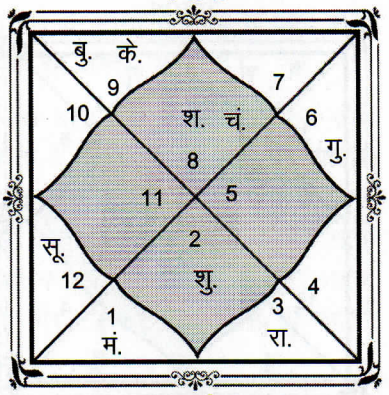

षष्ठांश

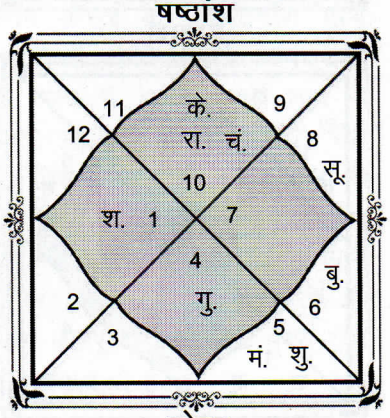

गोचर

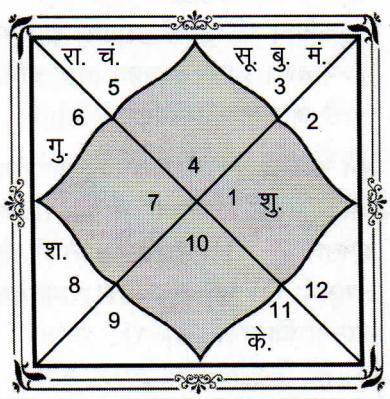

– शुभ प्रभाव रहित लग्न राहु/केतु, शनि और सूर्य से पीड़ित है। शनि मारकेश एवं अष्टमेश हैं। सूर्य भी मारकेश हैं। राहु/केतु लग्न अंशों के निकट हैं जिससे इनका प्रभाव अधिक होगा।

– लग्नेश चन्द्र जन्मकुंडली में सुस्थित और सबल लग रहे हैं परन्तु नवांश में शनि से पीड़ित होकर बल खो रहे हैं।

– जन्मकुंडली में शनि का अष्टमेश होकर षष्ठम भाव और षष्ठेश गुरु पर भी प्रभाव है।

– डी 6 में जन्म लग्नेश चन्द्र राहु/केतु और शनि से पीड़ित हैं जो स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। डी 6 का बली लग्नेश घटनाएँ/रोग और प्रतिरोधक क्षमता दोनों देते हैं परन्तु शनि नीचस्थ हैं। डी 6 का षष्ठम भाव भी शनि दृष्ट है।

– मंगल/गुरु/सूर्य की दशा में जातक अस्पताल गए। इस समय मारकेश/अष्टमेश शनि गोचरवश षष्ठम भाव की धनु राशि में थे जिससे रोग भाव, द्वादश भाव और अष्टम भाव भी सक्रिय हो गये। अष्टम में महादशानाथ मंगल हैं। गोचर में रोगेश गुरु शत्रु राशिस्थ होकर मंगल से पीड़ित हैं। गोचरवश राहु मारक भाव में लग्नेश से युत हैं।

इन सभी स्थितियों ने जातक को अस्पताल पहुँचाया और कैंसर जैसा रोग दिया। इसके बाद मंगल/शनि/शनि की दशा आई जिसमें राहत मिलने के संकेत न्यून हो गए।

उदाहरण–2

जन्म तारीखः 19 अगस्त 1934, जन्म समय : प्रातः 4 बजे, जन्म स्थान : आगरा, उत्तर प्रदेश, लिंग : महिला। जातिका स्तन कैंसर से पीड़ित थी जिसका पता जनवरी 1992 में लगा था और लगभग 10 वर्षों के पश्चात् फरवरी 2001 में जातिका का देहांत हो गया।

- कुंडली में लग्न राहु/केतु अक्ष पर है, लग्नेश पर वक्री शनि का प्रभाव है जो मारकेश और अष्टमेश भी हैं। नवांश लग्न और नवांशेश पर राहु युत मंगल एवं शनि का प्रभाव है। नवांश लग्न में नीचस्थ शुक्र हैं। ये सभी प्रभाव लग्न यानि शरीर को अत्यधिक निर्बलता दे रहे हैं।
- जुलाई 1991 तक सूर्य की महादशा चली जो कि जन्मकुंडली और नवांश में बली हैं और आरोग्य के कारक भी हैं। अतः सूर्य की महादशा में स्वास्थ्य सम्बंधित कोई समस्या नहीं हुई। चन्द्र/राहु दशा में रोग का पता चला और चन्द्र/गुरु में रोग फैल गया।
- महादशानाथ चन्द्र लग्नेश होकर नीचस्थ हैं, अष्टमेश शनि से दृष्ट हैं और नवांश में भी पीड़ित हैं।
- रोगेश गुरु पर भी दोनों कुंडलियों में मंगल से पीड़ा है।
- डी 6 में जन्मकुंडली की पंचम राशि उदित है। डी 6 का लग्न पीड़ित नहीं है। जन्मकुंडली के लग्नेश चन्द्र मंगल से पीड़ित हैं परन्तु मंगल की स्थिति अच्छी है इसीलिए शीघ्र बड़ी हानि नहीं

उदाहरण 2 जन्मकुंडली

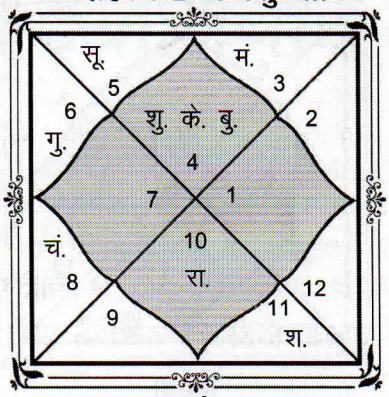

नवांश

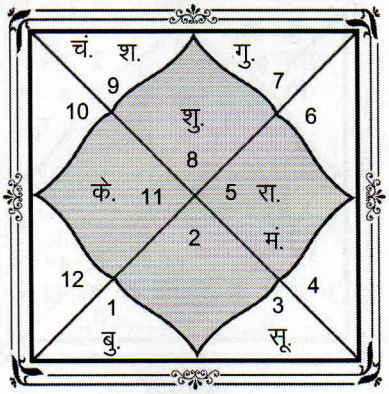

षष्ठांश

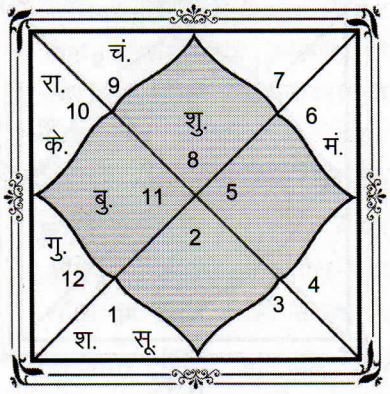

करेंगे। डी 6 के षष्ठम भाव में नीचस्थ और उच्चस्थ ग्रह दोनों हैं और गुरु स्वराशिस्थ हैं।

इन सभी कारणों से जातिका को रोग मिला परन्तु जातिका में प्रतिरोधक क्षमता भी थी जिससे जातिका ने लगभग 10 वर्षों तक इस रोग का सामना किया।

आधुनिकतम शोध

आधुनिक चिकित्सा पद्धति के विकास से रोग का यदि सही समय पर पता चल जाये तो इलाज संभव है। युवराज सिंह इसका एक जीता–जागता उदाहरण हैं। मई–2017 में जॉन्स हॉपकिंस के शोधकर्ताओं ने मानव शरीर की एक जैव रासायनिक सिग्नलिंग प्रक्रिया (biochemical signaling process) की खोज की है जो सघन कैंसर कोशिकाओं को तोड़कर शरीर में फैलाता है। शोधकर्ताओं ने यह भी प्रतिपादित किया है कि दो मौजूदा दवाओं का संयुक्त उपयोग इस प्रक्रिया को बाधित करता है जिससे कैंसर फैलने की गति कम हो जाती है। यह एक महत्वपूर्ण खोज मानी जा रही है।

ज्योतिषीय उपाय

ज्योतिष के अनुसार कुंडली में कैंसर देने वाले पापी ग्रहों को शांत करवाने का उपाय करना चाहिए।

निष्कर्ष

अनेकों कुंडलियों पर कार्य करने के पश्चात् निष्कर्ष यह है कि कुंडली में ज्योतिषीय आकलन से दीर्घकालिक रोगों की सम्भावना तो पता चलती है परन्तु कैंसर घोषित कर पाना एक कठिन कार्य है। आशा है कि शोधकर्ता इस विषय पर शोध करके निकट भविष्य में कैंसर के सटीक योग प्रस्तुत करेंगे। ❐

पता–सोम अपार्टमेंट्स,
बी–301, सेक्टर–6, प्लॉट–24,
द्वारका, नई दिल्ली–110075
दूरभाष :9810162371